19
19
171
19×
361

भूमण्डलीकरण (वैश्वीकरण) Globalization

भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण से अभिप्राय =)

भूमण्डलीकरण पूरे विश्व को एक गाँव बनाने की बात करता है। नये सन्दर्भ मे भूमंडलीकरण वह व्यवस्था है, जिसमे पूँजी राष्ट्रीय सीमाओ को लांघकर मुक्त रूप से विचरण करती है। और अपने विस्तार के लिए सस्ते श्रम सस्ते कच्चे माल की तलाश मे रहती है, जिसमे अन्तर्राष्ट्रीय वितीय संस्थाओ तथा अमीर देशो के दबाव मे राज्यो के नियम - कानून समाप्त किये जाते है एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार समाकलित किया जाता है। इसमे दुनिया भर का व्यापार आपस मे जुड़ा होता है।

डॉ. विमल जालान के अनुसार, "भूमण्डलीकरण शब्द का प्रयोग कई तरह से हुआ है। एक अर्थ तो शाब्दिक है- इस अर्थ के अनुसार अब राष्ट्रो के बीच भौगोलिक दूरी बेमानी हो चुकी है दुनिया काफी छोटी हो चुकी है और कोई देश अपना नुकसान करके ही शेष विश्व से खुद को अलग-थलग रख सकता है भूमण्डलीकरण का दूसरा अर्थ =) यह देशी हितो के स्थान पर दूसरे देशो और बहुराष्ट्रीय निगमो के हितो को ऊपर रखने वाले नीतिगत बदलाव का नाम है।

[भूमण्डलीकरण के तत्व]

=) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अवरोधो को कम करना।

=) आधुनिक प्रौद्योगिकी का निर्बाध प्रवाह सम्भव बनाने हेतु उपयुक्त वातावरण बनाना।

=) विभिन्न देशो के बीच पूँजी का स्वतन्त्र प्रवाह सम्भव बनाने हेतु आवश्यक परिस्थितियाँ पैदा करना।

=) संसार के विभिन्न देशो में श्रम का निर्बाध प्रवाह सम्भव बनाना।

Scanned with CamScanner

⇒ विभिन्न देशो के बीच कच्चे माल का मुक्त भाव से बिना कि
रोक - टोक के अन्तर्गमन एंव बहिर्गमन ।
⇒ सूचना प्रौद्योगिकी के अत्याधुनिक एंव परम्परागत साधनो का
प्रयोग करते हुए सूचनाओ, आंकडो, ज्ञान, सांस्कृतिक एंव धार्मिक
विचारधाराओ का आदान - प्रदान करते हुए सारे विश्व को
वैश्विक गांव के रूप मे संस्थापित करना ।

~~भूमण्डलीकरण की विशेषताएं~~

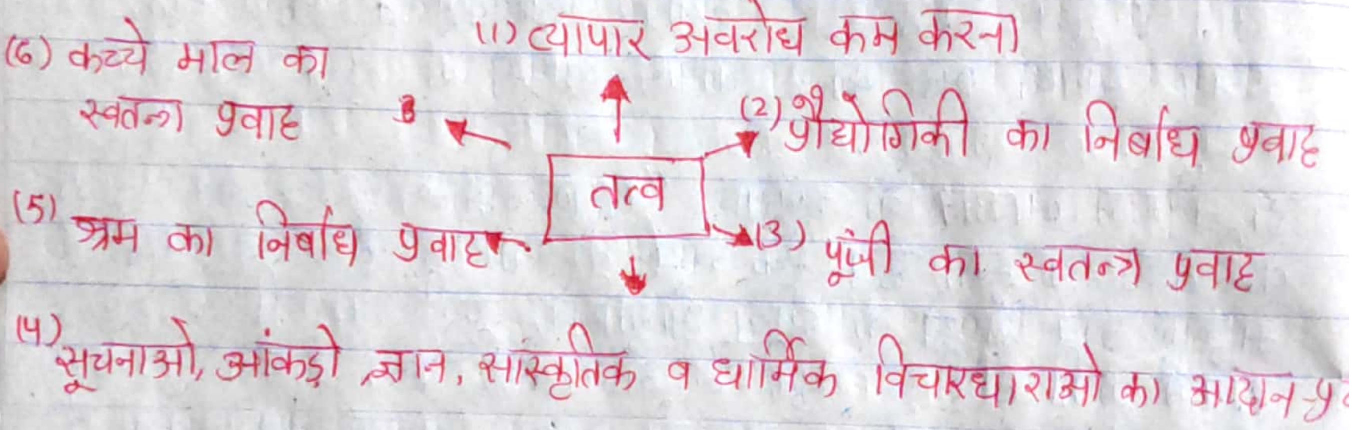

भूमण्डलीकरण की विशेषताए -

(1) विश्व का एक वैश्विक गांव के रूप में संस्थापित होना - यातायात और संचार साधनो में हुए क्रांतिकारी विकास के चलते भौगोलिक दूरियाँ सिमट गई है। अब न केवल व्यापार, तकनीकी एंव सेवा क्षेत्र, बल्कि लोगो का भी सीमा पार आवागमन सस्ता एंव सुगम हो गया है। कम्प्यूटर और इण्टरनेट भी तेजी से विश्व को जोड़ रहा है।

(2) अर्थव्यवस्था का समन्वय - दो अर्थव्यवस्थाओ के मध्य उत्पादो एंव सेवाओ का मुक्त वातावरण होने वाले विनिमय से ही उनका समन्वय संभव होता है विगत

दशकों में ऐसे ही वातावरण का निर्माण वैश्विक स्तर पर हुआ है जिसका मुख्य कारण भूमण्डलीकरण की संकल्पनाओं का विकास एवं विस्तार है।
इस प्रकार समन्वय की सहायता से उत्पादों एवं सेवाओं के सीमान्तीय प्रवाह में अप्रत्याशित वृद्धि होती है जिसका लाभ उपभोक्ताओं को प्राप्त होता है।

(3) ग्लोबल संस्कृति ⇒

वैश्वीकरण में इलेक्ट्रानिक मीडिया ने दूर-दराज में पहुँचकर एक वैश्विक संस्कृति की स्थापना हो गयी है। जीन्स, टी शर्ट, फास्ट-फूड, पॉप संगीत हॉलीवुड फिल्म एवं सैटेलाइट टेलीविजन की संस्कृति आज के हर युवक की संस्कृति है।
इसी प्रकार उपभोक्तावाद भी एक वैश्विक संस्कृति के रूप में भूमंडलीकरण की एक विशेषता है। भ्रष्टाचार तथा अपराध के तरीको का भी वैश्वीकरण हो इस प्रकार भूमण्डलीकरण में एक वैश्विक संस्कृति का जन्म होता है।

(4) विश्व व्यापी श्रम बाजार ⇒

भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत श्रम बाजार विश्वव्यापी हो जाता है। उदाहरण के लिए भूमण्डलीकरण से पूर्व की अवस्था में 1965 में लगभग 7 करोड़ 50 लाख लोग एक देश से दूसरे देश में रोजगार की दृष्टि से प्रवासित हुए थे, लेकिन वैश्वीकरण के चलते 1999 में प्रवासी श्रमिकों की संख्या 12 करोड़ से अधिक हो गई और वर्तमान में यह संख्या ⇒

Scanned with CamScanner

(5) श्रम बाजार के एजेन्टों का सक्रिय होना =

भूमण्डलीकरण में वैश्विक श्रम बाजार में विशेषकर श्रम निर्यातक देशों में, श्रम एजेन्ट सक्रिय हो जाते है जो वैध एवं अवैध दोनों तरीकों से लोगों को विदेशों में काम दिलवाते है।

(6) शिक्षा का भूमण्डलीकरण =>

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा का भी भूमण्डलीकरण हो जाता है। यही कारण है कि आज अनेक विकासशील देशों के शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रम भी विश्वस्तरीय हो गये है जिससे शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी विश्व में कहीं भी रोजगार पा सकते है।

(7) पेशेवरों की लचीली आवाजाही =>

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया मे पेशेवरों की आवाजाही तीव्र हो जाती है। वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षाविद, वकील वास्तुविद लेखाकार, प्रबन्धक बैंकर एवं कम्प्यूटर विशेषज्ञ आदि पेशेवरों का विदेश आवागमन भी पूँजी प्रवाह की तरह लचीला हो जाता है।

(8) कार्यकुशलता उन्नयन =>

तुलनात्मक लाभ सिद्धान्त के आधार पर ही उत्पादन क्षेत्र मे विशेषज्ञ दृष्टिकोण प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी देश द्वारा ऐसे दृष्टिकोण की प्राप्ति के उपरान्त उत्पाद विशेष के विपणन हेतु बाजारों की उपलब्धता में वृद्धि होती है।

(9) प्रमुख कर्ता => U.N.D.P. की ह्यूमन डेवलपमेंट रिपोर्ट के अनुसार प्रमुख कर्ता =>

प्रमुख कर्ता

- W.T.O
- बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ
- अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन

Scanned with CamScanner

(W.T.O.)
(i) विश्व व्यापार संगठन ⇒
विश्व व्यापार संगठन सदस्य देशो की राष्ट्रीय सरकारो के ऊपर अपना वर्चस्व एंव प्रभुता रखता है।

(ii) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ ⇒ बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ, जिनके माध्यम से पहले उत्पादित वस्तुएँ, सेवा, तकनीक, पूँजी आदि की आवाजाही होती है। आज भूमण्डलीकरण के युग में ये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार देने वाले की भूमिका निभा रही है। भिन्न-भिन्न देशो से विशेषज्ञो, प्रबन्धको कुशल-अर्द्धकुशल श्रमिको आदि की नियुक्ति इन निगमो द्वारा की जाती है। इन नियुक्त कर्मचारियों को ~~विश्वभर~~ विश्वभर में फैले निगम की विभिन्न शाखाओ में नियुक्त किया जाता है। इस प्रकार यह प्रक्रिया भी श्रम-प्रवाह को बढ़ावा देती है।

भूमण्डलीकरण के लाभ

(1) निर्धनता, बेरोजगारी, कुपोषण, अशिक्षा जैसी समस्याओं का निराकरण ⇒
वैश्वीकरण के समर्थको - मुख्य रूप से बहुराष्ट्रीय कम्पनियो तथा विकसित देशो की निजी कम्पनियो एंव सरकारो का तर्क है कि वैश्वीकरण को अपनाकर तृतिय विश्व में व्याप्त निर्धनता, बेरोजगारी, कुपोषण, अशिक्षा जैसी गंभीर समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है, वैश्वीकरण के सहारे पूँजी निर्माण की समस्या तथा कमी से ग्रसित विकासशील एंव पिछड़े देशो में बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के माध्यम से निवेश बढ़ाया जा सकता है, नए निवेश से राष्ट्रीय आय तथा रोजगार में वृद्धि होगी।

Scanned with CamScanner

(2) उत्पादन क्षमताओं का विकास ⇒
औद्योगिक प्रगति में पिछड़े देश वैश्वीकरण के माध्यम से विश्व की आधुनिकतम तकनीक प्राप्त करके अपनी उत्पादन क्षमताओं का विकास कर सकते है। और इस प्रकार से अपने निर्यातों की सूची में प्राथमिक वस्तुओं के साथ-साथ विनिर्माणी वस्तुओं को शामिल करके निर्यातों को बढ़ा सकते है।

(3). विकासशील देशों के लिए रोजगार की बेहतर सम्भावनाएँ ⇒
भारत जैसे विकासशील देश, जहाँ उच्च शिक्षित, प्रशिक्षित श्रम-बल अधिकता में है, अपने अतिरिक्त श्रम हेतु विकसीत एंव विकासशील देशों में रोजगार की बेहतर सम्भावनाएं तलाश सकते है, जैसे कि भारत के इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, प्रबन्ध विशेषज्ञ संयुक्त राज्य अमेरिका तथा ब्रिटेन जैसे विकसित देशों की अर्थव्यवस्था के मेरुदण्ड है।

(4) इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास तथा आधारभूत एंव प्रमुख उद्योगों की स्थापना ⇒
भूमण्डलीकरण में प्रत्यक्ष निवेश को बढ़ावा देकर तथा निवेश के मामले में घरेलू एंव विदेशी कम्पनियों के बीच सभी प्रकार का भेदभाव मिटाकर सड़क एंव राजमार्ग, रेलों, बन्दरगाहों, हवाई अड्डों का विकास किया जा सकता है। विद्युत गृह, तेल शोधशालाओं, आधारभूत एंव प्रमुख उद्योगों की स्थापना की जा सकती है।

(5) सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं का सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव =
भूमण्डलीकरण से सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं व मुद्दों ने विश्वव्यापी रूप ले लिया है। अब किसी क्षेत्र की समस्याओं पर सारा विश्व विचार करता है क्योकि सबके हित आपस में जुड़े हुए है।

Scanned with CamScanner

(6) ज्ञान की प्राप्ति =)

भूमण्डलीकरण के अन्तर्गत टेलीफोन, सेल्यूलर फोन, इन्टरनेट, ई-मेल, ई-व्यापार, ई-चिकित्सा, ई-शिक्षा, कम्प्यूटर जनित सूचना प्रौद्योगिकी के सहारे विश्व के किसी भी भाग में स्थित सर्वोत्तम ज्ञान को कहीं भी प्राप्त किया जा सकता है।

(7) विश्व अर्थव्यवस्था मे महत्वपूर्ण परिवर्तन =)

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के तीव्र विस्तार से विश्व अर्थव्यवस्था मे महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया मे विश्व-व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, अन्तर्राष्ट्रीय वित क्षेत्र तथा विदेश मुद्रा बाजार का विस्तार होता है जिससे विकास की गति तेज होती है, रहन-सहन का स्तर ऊंचा होता है तथा देशो और व्यक्तियो के लिए विकास व रोजगार के नए-नए अवसर मिलते है।

भूमण्डलीकरण से हानियाँ

(1) उपनिवेशवाद का ताजा संस्करण =)

तृतीय विश्व के देशो के अनेक नेता वैश्वीकरण को 19 वी शताब्दी के उपनिवेशवाद का ही ताजा संस्करण मानते है, यही कारण है कि वैश्वीकरण को नव-उपनिवेशवाद की संज्ञा दी जाती है।
तृतीय विश्व के नेताओ के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियां नव-उपनिवेशवादी खतरा है।

(2) प्रजातन्त्र के विपरीत =)

वैश्वीकरण प्रजातन्त्र के विपरीत परिस्थिति उत्पन्न करता है। प्राचीन समय में दूसरे देशो में हस्तक्षेप करने के लिए सेना भेजने की आवश्यकता होती थी, परन्तु आज वैश्वीकरण के कारण दूसरे देशो मे हस्तक्षेप करने के लिए सेना भेजने की आवश्यकता नहीं होती है। इतना ही पर्याप्त होता है कि

Scanned with CamScanner

वित्तीय प्रवाह को रोक दिया जाये, व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये, अथवा अनेक प्रकार से दूसरे देशो में जीविका - उपार्जन को प्रभावित किया जा सकता है।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय श्रम प्रवास में कमी →

जहाँ पिछले 25 वर्षों में भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है, वहीं अन्तर्राष्ट्रीय प्रवास में स्पष्ट कमी आई है इसका कारण यह है कि भूमण्डलीकरण का संस्थागत ढांचा भेदभाव से भरा है। एक तरफ तो यह प्रावधान है कि राष्ट्रो की सीमाएँ व्यापार एवं पूँजी प्रवाह में बाधक न बने, दूसरी ओर तकनीक और श्रम प्रवाह के मार्ग में विकसित देशो द्वारा अड़चने डाली जा रही है।

विकसित देश यह उम्मीद करते है कि विकासशील देश अपने बाजार अमीर देशों के लिए खोल दे। तथा पूँजी निवेश अपने यहाँ होने दे, लेकिन बदले में विकसित देशो से तकनीक तथा निर्विघ्न श्रम प्रवाह की माँग न करें।

(4) राष्ट्रो और लोगो के आय स्तरो के बीच की खाई बढ़ना ⇒

पिछले 35 सालो में भूमण्डलीकरण के चलते राष्ट्रो और लोगो के आय स्तरो के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। आय वितरण की असमानताएं भी बढ़ी है लेकिन अमेरिका, अफ्रीका और पूर्व समाजवादी देशो में गरीबी बढ़ी है। संगठित क्षेत्र में रोजगार के अवसर कम हुए है। इसलिए अधिकतर श्रमिक असंगठित क्षेत्रो में काम करने पर मजबूर है, जहाँ उत्पादकता और मजदूरी स्तर निम्न है।

(5) पिछड़े राष्ट्रो को हानि ⇒

पिछले वर्षों मे

भूमण्डलीकरण के दौड़ में अमीर और विकसित देशो को लाभ हुआ है तथा इस प्रक्रिया मे सम्पतिशाली, उच्च शिक्षित पेशेवर, प्रबन्धन तकनीक का ज्ञाता तथा लाभ हेतु जगह - जगह पहुँचने में सक्षम वर्ग को लाभ पहुँचा है और छोटे - मोटे काम करने वाले, जोखिम न उठाने वाले और किराये की तकनीक अपनाने वाले नुकसान मे रहे है।

(6) सदस्य राष्ट्रो की सम्प्रभुता का हनन =>

भूमण्डलीकरण के दौर में विश्व व्यापार संगठन जैसे निकायो के दायरे में वे मामले भी आ गये है जो आर्थिक गतिविधियो और सामाजिक सम्बन्धो को प्रभावित करते है और पूरी तरह सम्प्रभु राष्ट्रो के अधिकार क्षेत्र में ही आते है। इसे भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया का नाम दिया गया है लेकिन इसका उद्देश्य सदस्य राष्ट्रो की ~~सम्प्रभु~~ सम्प्रभुता का हनन करना और उनके अधिकारो को सीमित करना है।

(7) क्षेत्रीय असन्तुलन को बढ़ावा =>

भूमण्डलीकरण का अन्य दुष्प्रभाव यह है कि विदेशी कम्पनियाँ क्षेत्रीय असन्तुलन को तीव्र कर देती है। जैसे भारत में विदेशी कम्पनियों को जो अधिकांश नवीन स्वीकृतियाँ प्रदान की गई है। उनका 50% से ऊपर निवेश महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल व दिल्ली राज्यो में उद्योग स्थापित करने के लिए है। इससे क्षेत्रीय असन्तुलन को बढ़ावा मिलता है जो राष्ट्र के हित में नहीं है।

विख्यात लेखक प्रदीप एस. मेहता का मानना है कि "वैश्वीकरण ने विकासशील अर्थव्यवस्थाओ को बाह्य धक्को के प्रति कमजोर एवं निरीह बना दिया है क्योंकि ये देश बाह्य असन्तुलनो का ~~सामना~~ सामना करने लायक यांत्रिकी से लैस नहीं है।

भूमण्डलीकरण का अन्तरराष्ट्रीय राजनीति पर प्रभाव

1) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय और व्यापारिक संस्थाओ के महत्व में वृद्धि =)

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया मे संयुक्त राष्ट्र संघ और उससे सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय और व्यापारिक संस्थाओ की भूमिका और महत्व में वृद्धि हुई है।

2) विश्व व्यापार संगठन की स्थापना =)

भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के चलते "विश्व व्यापार संगठन" जैसे ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना हुई जो विश्व व्यापार के क्षेत्र मे पुलिसमैन की भूमिका का निर्वाह करने लगा है। सिद्धान्ततः तो इस संगठन की स्थापना अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन करने के लिए की गई है, लेकिन व्यवहार में यह संगठन सामूहिक और अलग - अलग तौर पर विकासशील देशों के अर्थतन्त्र, समाज और राजनीति पर प्रभुत्व जमाने का माध्यम है।

3) बहुराष्ट्रीय निगमो का बढ़ता प्रभाव =)

भूमण्डलीकरण से बहुराष्ट्रीय निगमो को खुली छूट मिल गयी है और बहुराष्ट्रीय निगम निर्धन राष्ट्रों पर धनी - राष्ट्रो के नव- उपनिवेशीय नियंत्रण के वाहक है।

4) गरीब देशो की अमीर देशो पर बढ़ती निर्भरता =)

राजनीतिक अर्थ में विश्व व्यापार में भागीदारी बढ़ाने का अर्थ होगा गरीब देशो की अमीर देशो पर निर्भरता का बढ़ना। यह निर्भरता अन्ततः राजनीतिक निर्भरता और सामाजिक - राजनीतिक कीमत चुकाने तक जाता है।

Scanned with CamScanner

5) कार्य संस्कृति पर प्रभाव =)

भूमण्डलीकरण का कार्य संस्कृति पर भी प्रभाव पड़ता है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों को अधिक वेतन तथा सुविधाएँ देकर न केवल आर्थिक असमानता को बढा रही है बल्कि कार्य - संस्कृति (work culture) पर भी कुठराघात कर रही है।
आज इन बहुराष्ट्रीय, राष्ट्रीय कम्पनियों की वजह से कर्मचारियों का ऐसा वर्ग पैदा हो गया है जो बेहतर वेतन एवं सुविधाओं के लालच में इनकी तरफ मुड़ता जा रहा है, एवं सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारी भी इस तरफ वेतन व सुविधाओं के मुद्दों को लेकर आये दिन हड़ताल, प्रदर्शन, काम रोको आदि में लगे है। इससे जहाँ हमारे अरबो रूपये का कोई मूल्य नहीं रहता, वहीं कार्य दिवसो में हानि की वजह से औद्योगिक उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है।

6) सामाजिक - राजनीतिक समस्याओं का विश्वव्यापी रूप ले लेना =)

भूमण्डलीकरण के कारण किसी क्षेत्र की समस्याओं पर सारा विश्व विचार करता है क्योंकि सबके हित आपस में जुड़े हुए है।

Scanned with CamScanner

वैश्विक आतंकवाद

आतंकवाद का अर्थ =)

आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है जो अपनी स्वार्थसिद्धि और राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हर प्रकार की शक्ति तथा अस्त्र-शस्त्रो के प्रयोग में विश्वास करती है। इसमे अस्त्र-शस्त्रो का प्रयोग प्रायः विरोधी वर्ग, समुदाय, सम्प्रदाय अथवा राष्ट्र विशेष को गैर-कानूनी ढंग से डराने, धमकाने, जान से मार देने, हिंसा के माध्यम से सरकार को गिराने, शासन तन्त्र पर अपना प्रभुत्व जमाने, समाज में आतंक स्थापित करने आदि के उद्देश्य से किया जाता है।

वैश्विक व अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद =)

जब आतंकवादी संगठन के सदस्य संगठित होकर राष्ट्र की सीमाओ को लाँघकर दूसरे देशो में आतंकवादी घटनाए करते है, तो उसे अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद कहा जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय या वैश्विक आतंकवाद में कोई आतंकवादी संगठन अनेक देशो में अपना नेटवर्क फैलाकर किसी समुदाय, राष्ट्र या देश या सरकार के विरुद्ध अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए आतंक फैलाने की घटनाए कर सकता है।

आतंकवाद का इतिहास =)

आतंकवाद मानव समाज मे लंबे समय से मौजूद है। कुछ शुरूआती उदाहरण यहूदी सिक्रिली है जो मध्यपूर्व मे रोमन शासन को उखाड़ फेंकना चाहते थे उनका मानना था कि यहूदियो को अन्य लोगो द्वारा शासित नहीं किया जा सकता उन्हे केवल भगवान द्वारा शासित किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

एक अन्य उदाहरण गाय फॉक्स है जिसने इंग्लैण्ड पर कैथोलिक सम्राट को स्थापित करने के लिए एक आतंकवादी साजिश रची। फ्रांस मे गणतन्त्र की स्थापना आतंक के शासनकाल के बाद हुई, एक ऐसी अवधि, जिसके दौरान राज्य प्रयोजित आतंकवादी बड़प्पन के खिलाफ काम करता है और कोई भी उनका समर्थन करने के लिए समझा जाता है।

२० वीं और २१ वीं सदी =)

आतंकवाद का आधुनिक संस्करण जिसे हम सबसे अधिक परिचित है, ~~आतंकवाद~~ द्वितिय विश्व युद्ध के बाद प्रदान किया गया था।
दुनिया के अन्य हिस्सो मे लोगो को स्थानीय मुद्दो को वैश्विक ध्यान में लाने के लिए इस रणनीति को अपनाने की जल्दी थी और आधुनिक आतंकवाद का जन्म हुआ।

आतंकवाद का यह संस्करण सयुंक्त राज्य अमेरिका में ट्विन ट्रेड टावर्स और पेंटागन पर 11 सितम्बर 2001 को हुआ। इस हमले के बाद अमेरिका द्वारा एक अन्तर्राष्ट्रीय सैन्य पहल शुरू की गई थी। इस पहल को आतंक पर युद्ध कहा गया।

11 मार्च, 2004 को स्पेन की राजधानी मैड्रिड मे एक साथ चार ट्रेनो मे 10 बमो का विस्फोट हुआ।
इसी वर्ष 1 सितम्बर को चेचेन के बेसलेन नगर में एक स्कूल में दो दिनो तक आंतकवादियो का कब्जा रहा तथा 172 स्कूली बच्चो की मौत हुई।
फरवरी 2005 में हिल्ला में आतमघाती हमले मे 100 से अधिक मौत हुई।
सन 2005 मे कश्मीर में आतकवादियो ने अनेक आंतकी कार्यवाहियॉं की, 5 जुलाई 2005 में आंतकवादियो ने अयोध्या को अपना निशाना बनाया।

Scanned with CamScanner

7 जुलाई, 2005 को लंदन की भूमिगत ट्रेनो में आतंकवादियो ने विस्फोट करने मे सफलता पाई

2008 मे भारत मे सीरियल ब्लास्ट |

~~2005~~ - में

दुनिया में बड़ी आतंकवादी घटनाएँ =)

1978 - सिनेमा रेक्स की आग (ईरान के शहर अबादान)

1979 - बड़ी मस्जिद पर कब्जा (मक्का) = आतंकी =) मोहम्मद अब्दुल्लाह अल-काहतानी था।

1983 =) बेरूत की बैरको पर बमबारी =) दो ट्रको मे अमेरिकी और फ्रांसीसी सेनाओ के लिए बनी बैरको मे विस्फोट। संगठन => इस्लामिक जिहाद प्रमुख - हिजबुल्लाह ।

1988 - पैन एम उड़ान में विस्फोट => इस घटना को "लॉकरबी बमकांड" के नाम से भी जाना जाता है। (जिम्मेदार) - दो लीबियाई नागरिक

1993 - मुंबई बमकांड => संगठन "डी कम्पनी" प्रमुख 'दाऊद इब्राहिम'

1995 - ओक्लाहामा सिटी बमकांड => टिमोथी मैकवे को इस घटना को अंजाम देने के जुर्म में 2001 में जहर का इंजेक्शन देकर मार दिया गया।

1997 बेतंलहा, अल्जीरिया पर हमला => सशस्त्र "गुरिल्ला संगठन" ने इस हमले की जिम्मेदारी ली थी

1998 - अमेरिकी दूतावसो पर बमबारी => आतंकवादी गुट अल कायदा का मुख्या "ओसामा बिन लादेन"।

2001 - 9/11 का हमला => अल-कायदा ने न्यूयॉर्क व वाशिंगटन पर चार हमलो को अंजाम दिया।

2002 - बाली बमकांड => जेमाह इस्लामिया नाम के आंतकवादी संगठन ने किया।

2004 - मेड्रिड की ट्रेनो पर बल हमले - अल-कायदा

2004 - सुपरफेरी पर विस्फोट => अबू सय्याफ गुट

2005 - लदंन ट्रांसपोर्ट बमबारी => लदंन की अंडरग्राउंड ट्रेनो मे बम विस्फोट।

2006 - इराक की सद्र सिटी मे धमाके

2006 - मुंबई की ट्रेनो में बम विस्फोट - लश्कर ए तैयबा और स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) ने किया

2007 - कराची पर बम हमला

2007 - बगदाद बमबारी

2007 - अल हिल्लाह बमबारी

२007 - यजीदी समुदायो पर बमबारी => किसी भी समूह ने जिम्मेदारी नहीं ली।

२008 - 26/11 का मुंबई आतंकी हमला => लश्कर-ए-तैयबा (कसाब) व 9 अन्य आतंकी

२014 - पेशावर आर्मी स्कूल पर हमला => तहरीक-ए-[redacted] तालिबान संगठन

2015 - फ्रांस की राजधानी पेरिस में हमला - आतंकी ISIS के स्लिपर

Scanned with CamScanner

आंतकवाद के रूप

(1) मानव बम =)

मानव बम एक ऐसा हथियार है जिसमे मरने-मारने का संकल्प लिए उच्च विस्फोटको से लैस चलता-फिरता कोई युवक या युवती मानव बम बना व्यक्ति 6 से 8 किलोग्राम आरडीएक्स को बेल्ट में बांधकर अपनी कमर पर बांधे रखता है जो ब्लॉस्टिंग कैप और बैटरी से जुड़ी रहती है।
बेल्ट में भरे विस्फोटक का विस्फोटन इलेक्ट्रानिक प्रणाली पर आधारित होता है जिसे मात्र एक छोटे बटन को दबाकर विस्फोटित किया जा सकता है और वह बटन मानव बम बने व्यक्ति की सुविधाजनक पहुँच के भीतर पहुंच जाता है।

विश्व में लगभग 75 से अधिक आंतकवादी संगठन है जिनके पास मानव बम मौजूद है। इसमे लिट्टे सबसे प्रमुख है

(2) आंतकवादी संगठन =)

ये संगठन अपनी हिंसक गतिविधि के द्वारा सम्पूर्ण जनमानस को आतंकित करते है। इसमे फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन, आयरिश रिपब्लिक आर्मी अल फतह, अबू निदाल इलम् रिवोल्युशनरी आर्गेनाइजेशन हरकत उल-अंसार, मुजाहिर कौमी मूवमेंट आदि प्रमुख है।

(3) राज्य प्रायोजित आंतकवाद =)

आंतकवाद का तीसरा रूप राज्य प्रायोषित आंतकवाद है। विश्व के कई देश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आंतकवाद को शह व प्रश्रय दे रहे है, क्यूबा, ईरान इराक, उत्तरी कोरिया, दक्षिणी यमन और सीरिया को इस आंतकवाद का

समर्थक माना गया है। ऐसे देशो की सूची मे पाकिस्तान का नाम भी जुड़ गया है जो भारत मे आतंकवाद को बढ़ावा देता है।

(4) इस्लामिक आतंकवाद =)

इस्लामिक आतंकवादी इस्लामी राज्य की स्थापना के जुनून मे आतंकवादी कृत्य करते है, इसे वे जिहाद कहते है। अलकायदा इसका स्पष्ट उदाहरण है।

यह विचारधारा के रूप मे आतंकवादी विश्वविद्यालय खोलकर नवयुवको को दीक्षित करता है। जिन्हे आतंकवादी सेना मे नियमित भर्ती की जाती है। ये प्रशिक्षित आतंकवादी छोटे राज्यो को सहयोग प्रदान करते है तथा हथियारो की तस्करी करते है। तथा गैर इस्लामिक राज्यो मे आतंकवादी घटनाओ को अन्जाम देते है।

अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति के लिए प्रयास

(1) संयुक्त राष्ट्र संघ =)

संयुक्त राष्ट्र संघ ने कानूनी व राजनीतिक दोनो ही उपाय करते हुए आतंकवाद की समस्या को दुर करने का प्रयास किया है -

(i) कानूनी क्षेत्र -

कानूनी क्षेत्रो मे संयुक्त राष्ट्र और इसकी विशेष एजेन्सियो ने आतंकवाद के खिलाफ कानूनी दस्तावेज की रचना करने वाले अन्तर्राष्ट्रीय समझौतो के एक नेटवर्क को विकसित किया है। ये एजेन्सिया है - अन्तर्राष्ट्रीय नागर विमानन संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय

समुद्रीय संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय आणविक ऊर्जा एजेन्सी।

अन्तर्राष्ट्रीय समझौते –

(1) विमानन अपराधो पर कन्वेंशन, 1963
(2) विमानो के गैर-कानूनी कब्जे के निरोध हेतु कन्वेंशन, 1970
(3) नागर विमानन की सुरक्षा हेतु गैर-कानूनी कार्यो के निरोध पर कन्वेंशन, 1971।
(4) आणविक सामग्री की भौतिक सुरक्षा पर कन्वेंशन, 1980
(5) समुद्री-नौकायन की सुरक्षा के खिलाफ गैर कानूनी कार्यो के निरोध पर कन्वेंशन - 1988
(6) प्लास्टिक विस्फोटको के विपणन के कन्वेंशन, 1991

महासभा के कन्वेंशन =)
(1) बन्धक बनाने के खिलाफ कन्वेंशन, 1979
(2) संयुक्त राष्ट्र सहयोगी-कर्मचारी की सुरक्षा पर कन्वेंशन, 1994
(3) आतंकवादी बमबारी के निरोध के निमित अन्तर्राष्ट्रीय कन्वेंशन 1997
(4) आतंकवाद को वित पोषण हेतु करने के निरोध के निमित अन्तर्राष्ट्रीय कन्वेंशन।

लेकिन संयुक्त राष्ट्र के बहुत कम राष्ट्रो ने ही अभी तक इनकी पुष्टि की है, अधिकांश राष्ट्रो ने इनकी पुष्टि नहीं की है।

(ii) राजनीतिक क्षेत्र =)

राजनीतिक क्षेत्र में महासभा ने 1994 में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की समाप्ति के उपायो पर घोषणा की तथा 1996 में उसे स्वीकार किया जो आतंकवाद के सभी कार्यो को, वे जहाँ भी, जिसके द्वारा भी किए जाए, उन्हे अपराध और अनुचित ठहराते हुए उनकी भर्त्सना की।

Scanned with CamScanner

12 सितम्बर, 2001 को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने अमरीका पर हुए आतंकवादी हमलो की निंदा की तथा संकल्प 1373 पारित किया। इसमे सभी राज्यो से आतंकवादी कृत्यो को धन देने से रोकने और उसका दमन करने, सम्भावित आतंकवादियो की सभी वितिय परिसम्पत्तियो तथा आर्थिक संसाधनो पर रोक लगाने तथा आतंकवादियो को किसी प्रकार के समर्थन से बचने का आह्वान किया गया।

(2) संयुक्त राज्य अमेरिका की आतंकवाद के विरुद्ध जंग की नीति 2001 के बाद =)

11 सितम्बर 2001 की घटना के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति बुश ने आतंकवाद के विरुद्ध जंग की नीति अपनायी। =)

(i) आतंकवाद के विरुद्ध विश्व जनमत को साथ लेने की कूटनीति।

(ii) आतंकवादीयो के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष की नीति

(iii) आतंकवाद को इस्लाम से अलग करने की नीति

(3) आतंकवाद रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठन =)

(i) काउंटर टेररिज्म कमेटी (सीटीसी) =)

संयुक्त राष्ट्र संघ के अधीन कार्यरत यह कमेटी राष्ट्र संघ द्वारा पारित आतंकवाद विरोधी प्रस्तावो के क्रियान्वयन का कार्य करती है, तथा आतंकवाद से जूझ रहे देशो की सहायता करते है।

(ii) फिनांशियल एक्शन टास्क फोर्स =)

यह अन्तर्राष्ट्रीय संस्था आतंकवादियो के वितिय स्त्रोतो पर निगाह रखती है

(iii) आपरेशन ग्रीन क्वेस्ट =) न्यूयार्क स्थित यह आतंकवादि के वितीय स्त्रोतो पर रोकथाम का कार्य करता है। इसे अमेरिका ने स्थापित किया था।

(iv) काउन्टर टेररिज्म ग्रुप (सीटीएजी) -यह संगठन भी आतंकवादियों के वितीय स्त्रोतो पर निगाह रखता है। इसके 8 सदस्य है।

(v) भारत की आतंकवाद विरोधी नीति =) आतंककारी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए भारत सभी छोटे - बड़े देशो से इस बुराई के खिलाफ संगठित होकर कार्य करने पर बल दे रहा है, हालांकि विश्व के सभी देश अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ तो रहे है लेकिन उससे निपटने की दिशा मे रुचि प्रदर्शित नहीं कर रहे है। भारत ने इसकी निम्नलिखित पहल की है-

(i) अप्रेल 2002 मे ज-77 देशो के शिखर सम्मेलन मे भारत ने इस दिशा मे सभी देशो को प्रेरित किया तथा इस शिखर सम्मेलन ने आतंककारी गतिविधियो के लिए दी जाने वाली वितीय सहायता पर रोक लगाने के लिए सयुंक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव को शीघ्र क्रियान्वित करने का आह्वान किया।

(ii) जून, 2000 में सम्पन्न जी-15 के काहिरा सम्मेलन मे भी भारत की पहल पर अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की भर्त्सना की गई और इस बारे में सयुंक्त राष्ट्र के तहत समझौते की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

Scanned with CamScanner

(iii) 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका पर हुए आतंकवादी हमले के खिलाफ भारत ने अमरीका को आतंकवाद के खात्मे के लिए अपने पुरे योगदान का आश्वासन दिया।

(iv) 6 जनवरी, 2002 को भारत-ब्रिटिश नई दिल्ली घोषणा पत्र में आतंकवाद के विरुद्ध चार मूल बिन्दु निर्धारित किये गये जिनके प्रति प्रतिबद्धता दोनों देशो ने व्यक्त की। ये निम्न है →

(अ) आतंकवाद को किसी भी आधार पर न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता।

(ब) आतंकवाद को समर्थन देने वाले व्यक्तियों व संगठनो की निन्दा की जाए।

(स) पारस्परिक सहयोग के लिए आतंकवाद उन्मूलन समिति बनाने पर सहमति

(v) सितम्बर 2007 को सम्पन्न सयुंक्त राष्ट्र महासभा के 62 वें अधिवेशन से सयुंक्त राष्ट्र संघ द्वारा वैश्विक आतंकवाद विरोधी रणनीति को स्वीकार किये जाने को एक महत्वपूर्ण घटना बताते हुए भारत के विदेश मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी ने आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट होकर संघर्ष की हिमायत की।

(vi) दक्षेस के 16 वें शिखर सम्मेलन में (2010) में दक्षिण एशिया में बढते आतंकवाद और धार्मिक कट्टरपंथ को समाप्त करने व आपराधिक मामलो में परस्पर सहयोग के साथ सदस्य देशो ने समर्थन किया तथा आतंकवाद, चरमपंथ और उग्रवाद से सामूहिक रूप से लड़ने की प्रतिज्ञा की।

Scanned with CamScanner